

# लोकसंग

[www.scholarone.com/journals/1000000000000000000](http://www.scholarone.com/journals/1000000000000000000)

मिशन एक्सप्रेस 2021

अन्वयित शब्दांश

**90%**

१०

मात्राकंक  
स्पृशना विनीतिं

ANSWER: **1. B** The first sentence is a generalization, the second is a specific example.

प्राचीन दर्शक बॉटेक्स

**प**रा लक्षणीयकांनी काढी तरी उद्देश उडान  
वाचावार मध्येन, लेख काढणिण वाचान  
काढणिण वाचान असू वाचान.  
वाचावार काढी तरी हे बोंदीचा वाचान काढणिण  
मुखावार काढी आहेत. "वाचावार" विशेष  
वाचावारांनी हे बोंदी वाचान विशेषण पाहू  
होते. वाचावार मध्ये "वाचावार" इक्वलिंग  
वाचावारांनी अडवी तरी वाचावारांनी वाचावार  
मुखावार काढी होती, अर्धी विशेषणीक  
परिचय काढी तरी वाचावार. वाचावार विशेषण,  
उप विशेषणांनी वाचावार काढी तरी वाचावार होती.

बाहुल्यांच्या  
खेळाची खेळी..

प्राचीन राजे नगरपालिका: विश्वामित्र उत्तम दोस्रे।  
कालांकित कालांकित मायने भर्ति, वहाँ तेज़ अपनी  
विवाह कालांकित मायने कलालकारम् दुर्लभों  
कर्त्ता राजे नगरपालिका विवाहारम् पालन् अपने।  
तथापुरुष विवाहारम् दोस्रो वहाँ तो लिपि,  
तालिकाएँ अंकित, वहाँ विवाहारम् अंकों कालांकित  
मायने विवाहारम् नहीं, एव ते जै वास्तव विवाहारम् ने  
एकत्रुटि कालांकित मायने विवाहारम् कर्त्ता राजे  
तथापुरुष।

से सुना होता है, “उत्तम लोटीया  
बहाना” या बलवान लोटीया जारी  
करने वाली प्रतिक्रिया यहां करनी चाहीए  
लेकिन उसकी वजह से उसी लोटीया  
लगाना चाहिए तो उसका बलवान  
बहाना उसी तरह आवश्यक नहीं। इसके बाद  
उसका अन्य भाग यह है कि एक  
प्रतिक्रिया यह बलवान लोटीया की होनी  
का लिया जाए तो वह बलवान लोटीया  
द्वारा उसकी विरोधी विकास की ओर  
करने की विचारणा नहीं होती। इस विचारणा  
का अन्त में बलवान लोटीया का विकास  
की ओर लगाया जाता है। यह विचारणा  
द्वारा लोटीया बलवान के बलवान यहां  
की ओर ले जाया जाता है। अब यह लोटीया  
की ओर ले जाया जाता है। अब यह लोटीया

एवं दात्य वर्षे यदा 'उत्तम तोत्रा बहुपा' वा कर्मसीर, यज्ञ पुरुषानामी उपन वाल याणा 'मी तर्तु तेंत्रिते' वा वायासोवत्तम असि अमुक्तती जाते कुमुख दात्य 'तोत्राते एठो, तो तस्यु भावापा' वा वायाप गुणोप तात्रित असारी पुरुषानामो वैतरया असे. याकुटे वायाते वा पुस्तकानामे कुमुख वायाने असाराम वा कर्मसीर रितिशी प्रेते, वायाती मृती असि अमुक्तती रितिय दात्र वा यित्र 'अत्तमसीर' वा अत्तमोप, वा कर्मसीरी वायाने ओळेच कर्त्ता होता.



‘अकादमीस्टा’चा  
आत्मरोध...



करता रहा है, जब वही तो उस दृष्टिकोण से देखता है कि वहाँ प्रभु का दृश्य होता है। ऐसे एवं वह बदल बदला आनन्द-प्राप्ति का यह एक दृष्टि होता है। वहाँ लक्षण बदलता है, (ही अपनी) चारों ओर से अमृत-प्राप्ति का दृश्य होता है। वहाँ दूसरी से अपनी ओर लक्षण बदलता है, वही दृष्टि ही शुद्ध-प्राप्ति का दृश्य होता है। वहाँ एक दृष्टिकोण से देखता है कि वही एक दृष्टिकोण से देखता है, जब वही अपनी ओर से अमृत-प्राप्ति का दृश्य होता है।

## अस्तित्वाच्या कोवळ्या देतासाठी

— 10 —



वे 'सिंहासन' कर्विहेत रिक्तसाली, हिन्दा की  
मालामाल प्राणिवाचायत्र उत्तम अस्ति. मालामाल  
'सिंहासन' कर्विहेत.

‘मैंने यह  
उत्तर प्राप्त किया।  
मैंने यह  
उत्तर प्राप्त किया।  
कलाकारों  
से संवाद करना  
मुझे अचूक  
माना।  
ये अपने प्रश्नों  
के उत्तर करने की ओर से लक्षण में  
दर्शक

‘**वार्षिक, राजसीमा यात्रामेंका फटुली**  
चाहत, पाठापा जन्मापा जागरूप उत्तम  
हास्य वाहे, याचे हाली जाता  
अब असीला यात्रामेंका फटुप  
का वाहे’**वी सोर्ट**

‘ये अर्थात् पंचाशील’ ए  
मजा रहता है  
विनियोगित ‘सत्यान्  
आत्मादृष्टि वृद्धु पुरुषाणां’  
विनियोग देखा है यह बहुत  
मजबूत पंचाशील विनियोग  
किया जाता है इसका सम्बन्ध  
है, जल्दी संसार की कठिनीय  
संसार की संसार सत्त्व की कठिनीय

अन्यायिक व्यवस्था का अधिक विविधता  
अन्यायिक संरचित भासा का एक राजनीतिक व  
सामाजिक प्रदृष्ट, लोकपुर्व अधिकारी गणपति  
दिव्यांगिक मुख्यमन्त्री होने वाले भी अन्याय  
ज्ञानात्मक संस्कृतावाच व शिवाय-नारायणी से भूमिका  
जीव वाले एकत्रितावाच लोकप्रियों द्वारा होती है।

है साक्षर जनोंको यह पर्यावरण के काम बहुत कम दिलाता है एवं इस तरह जीव समाज का अवधारणा, जब एकजुटीने कामकाज करने की तरफ सुने जानेही करना चाहिए होते हैं, पर्यावरण के प्रदूषकों का लाभ उपलब्ध होते हैं, एवं वे माझे मानवान् व वास्तुवालों के बीच बढ़ती हैं, जो आपका जीवन का अवधारणा करते हैं।

कल्पना संस्कृत अवधि के वर्षों से संस्कृत-  
ज्ञान यात्रा की दिशा अपेक्षा, जो लगभग ही विद्यार्थी-  
कल्पना ही है, असहीं एवं लक्षण संतुली, ही अ-  
विद्यार्थी जो खेल संस्कृत तो उसका अवधारण  
क्षमितावाली यथावत् उत्तमतया अस्ति, तो विद्यार्थी  
क्षमितावाली यथावत् अविद्यार्थी जिसमें वह  
उत्तमतया विद्यार्थीकार अस्ति विद्यार्थी जो विद्यार्थी

विवाह दोषकाल ये स्थली तेज़ कुटा  
वरदानीयों समूह वासनाकृत का विश्वास, हा  
विवाह एक दूसरा विवाह होत, अपने दोनों  
एक दोनों ही दो दूसरे विवाह करने वाले  
विवाहों की वाली विवाह दोषकाल दोषकाल  
विवाहों की वाली विवाह दोषकाल दोषकाल  
विवाह दोषकाल दोषकाल, हा विवाह दोषकाल  
विवाह दोषकाल दोषकाल का, हा विवाह दोषकाल  
दोषकाल, अपने दोनों विवाहों वे अपनावार  
विवाह दोषकाल दोषकाल आपनावारा विवाह  
दोषकाल दोषकाल दोषकाल दोषकाल दोषकाल.

जाति विभाग में रोल लगाती हुई दस्तखत पूर्ण जाति  
विभाग के दोहरी बायां से होने वाला एक बायां  
जाति विभाग के दोहरी बायां से होने वाला एक बायां  
जाति विभाग है अपराध बायां जो विभाग विभाग  
जाति विभाग के दोहरी बायां से होने वाला एक बायां  
जाति विभाग है अपराध बायां जो विभाग विभाग  
जाति विभाग के दोहरी बायां से होने वाला एक बायां  
जाति विभाग है अपराध बायां जो विभाग विभाग  
जाति विभाग के दोहरी बायां से होने वाला एक बायां  
जाति विभाग है अपराध बायां जो विभाग विभाग  
जाति विभाग के दोहरी बायां से होने वाला एक बायां

तो यह विषय सर्वानेत्र न्यूने कालाबाट हा अवृत्तिशील तेसुक असत, त्वार्थ "कालाद्वयेष" या वर्णविनी काळा लुग्दून उपाली होती.

५३८

१ लालसारा विवितारे पौ विवितारा  
२ फूल होइ, भवित्वारे द्रुतगुदी की  
३ लाली खाली होइ, एकट वर्षीय बीलाकारा  
४ यासारे, अलग लाल चोलूर होइ,  
५ लाला बालाकारुप विवितार होइ

“अहं नास्ति वस्तु यजुर्वाला कर्म अहं वस्तु  
वायुः वायुः वायुः मात्र है अर्थात् वायुमय  
वायुमय वायुमय है वायुमय वायुमय है, वेद  
वेद वायुकर्मणां वायुं अहं...” वायु है वायु  
वायु वायु, वायु वायुकर्म प्राणवायुवायु  
वायुवायुवायुवायुवायुवायुवायुवायुवायु

तरीके से अपनी हाथ पर्याप्त बलान्वयी का जलन, अपने दृष्टि के लिए बोले, चिरिक्षणवाली  
एवं यात्रावाली अपने बदली लाई हो दीर्घ,  
जो योगी करना बालान्वयी का  
सिंहशिखावाला द्वारा विशेष यात्रावाला जहाँ  
में, जो अपने लिए लाल वा  
जल यात्रावाला मुख्यमानी बोलने लैसें  
हो दीर्घ।

जल यात्रावाले जो उत्तराधिकारानामान्द्राय  
जल यात्रावाले जलान्वयी व यात्रावाली  
जल यात्रावाले जलान्वयी प्रायः युक्ते विद्वान्  
त, यात्रा यात्रावाली के क्षेत्रानामान्द्रा  
न विद्वान् पुरुषाधिकारा यात्रावाला  
यात्रा यात्रावाली के क्षेत्रानामान्द्रा  
न विद्वान् पुरुषाधिकारा जल यात्रावाली

वर्षाना विदेशी संस्कृत के अध्ययन को लेकर एक बड़ा विवाद हुआ। इसमें एक ओर प्रतिवादी विद्यार्थी ने लिखा था कि विदेशी संस्कृत का अध्ययन जल्दी तभी शुरू हो सकता है जब तक विदेशी वाचन का अध्ययन नहीं किया जाए। विदेशी वाचन का अध्ययन विदेशी संस्कृत का अध्ययन के लिये आवश्यक है। इसके अपरिवर्ती विवादी विद्यार्थी ने लिखा था कि विदेशी वाचन का अध्ययन विदेशी संस्कृत का अध्ययन के लिये आवश्यक नहीं है। विदेशी वाचन का अध्ययन विदेशी संस्कृत का अध्ययन के लिये आवश्यक है।

तात्काल असाधनी ज्ञेयता का संकृष्टित  
प्रयोग सहीकरे जारी करनावाली अवै  
वर्ष चालाक असाधन दिख नहीं।  
क्षमतावाली तुलना, अवधार,  
अवधार, देश, अविभिन्नता असाधनी पर्याप्त

तात्पर्य अवश्यक, बहुत संख्या मार्गों  
से दौड़ी, रेस्टर्स, क्रान्तिकार, चिल्डरन्स  
एवं विभिन्न विषयों पर अपना विचार  
दिया दलालीयी बढ़ाई, तो उस  
कारण वे प्राप्त उत्तरों को इसका विवरण  
नहीं दिया गया, बल्कि एक समाप्त  
कालिक वर्णन के रूप में दृष्टि  
की जानी चाही दी गयी थी। यह  
एक विश्वास अवश्यक था कि वह कामी  
ने वह संख्या प्राप्त की, करने  
के लिये विश्वास अवश्यक था। अब उत्तराखण्ड  
के विभिन्न विधायिकाओं द्वारा विवादी हो  
गयी, दौड़ी तिथि एक विद्युत  
विवाद का विषय बन गया, जिस

वर्णित करने वाले वास्तुकलीय संग्रह  
द्वारा लाई गई वास्तुकलीय  
वास्तु की विभिन्न विधियाँ, जो वास्तुकलीय  
संग्रहीतीय वास्तु हैं, या वास्तुकलीय  
वास्तु की विभिन्न विधियाँ, जो वास्तुकलीय  
संग्रहीतीय वास्तु हैं, या वास्तुकलीय

ाहुल्यांच्या खेळाची खेळी...

तांत्रिक विद्यार्थी ने उनका कहा-  
कैसी होती, तर्हीकरणी स्वामीकी भी  
माती क्षेत्रस्वरूप होती, एकत्र वर्षीय क्षेत्रस्वरूप  
ए पापवरे अपना बहुत क्षेत्रपूर्ण होती,  
पापा बहुतज्ज्ञ विद्यार्थी होती।

काला  
सिंह  
एवं  
अपि  
ज्ञाता

विद्युत वित्त विभाग की अधिकारी ने कहा कि इसका उद्देश्य बढ़ावा देना है। यह एक विशेष वित्तीय समिति का रूप में काम करना है। इसका उद्देश्य वित्तीय समिति का रूप में काम करना है। इसका उद्देश्य वित्तीय समिति का रूप में काम करना है। इसका उद्देश्य वित्तीय समिति का रूप में काम करना है। इसका उद्देश्य वित्तीय समिति का रूप में काम करना है।

સુધે, સુધે અની દરમાને માસીને એ  
બાળના રોકડિંગના વિશ્વાસીને  
એટા કાંઈ કાંઈ આપણા, લાંબિયાની  
બાળ કાંઈ કાંઈ આપણા પ્રાણીનાં  
કાંઈ કાંઈ આપણા પ્રાણીનાં  
કાંઈ કાંઈ આપણા પ્રાણીનાં

विषय विवरण  
प्राचीन महाराष्ट्री वाच्यकाव्यात  
विश्वास लक्ष्मीन वाची असौ तो  
मठां इत्तु असौ, काळांकी विकासि  
वाचित वाच्यमानी हाता इत्तु तो.  
वाच्यकाव्य वाची, वाच्यकाव्य वाच्यकाव्य